॥ श्री ॥

वर्धमानचरित

VARDHAMAANACHARITA

असग · ११वीं शती · अभिलेख ५७/९०

श्री नागनन्दि → असग

संक्षिप्त परिचय

भगवान महावीर के चरित की काव्य-परम्परा का ग्रन्थ — सूची में असग-कृत वर्धमान-चरित दो क्रमांकों (39 एवं 57) पर अंकित है, जो स्रोत की ही व्यवस्था है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

वर्धमानचरित — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ५७ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता असग; रचना-काल ११वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २१५) के अनुसार इनका समय ९८८ है तथा गुरु श्री नागनन्दि। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "वर्द्धमान चरित्र" उल्लिखित है। इसी लेखनी से वर्धमानचरित्र, शांतिनाथपुराण भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में धर्मपरीक्षा, श्रावकाचार, सुभाषितरत्नसंदोह, पार्श्वनाथचरित, न्यायकुमुदचन्द्र, प्रमेयकमलमार्तण्ड परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

वर्धमानचरित्र · शांतिनाथपुराण

समकालीन ग्रन्थ

धर्मपरीक्षा · श्रावकाचार · सुभाषितरत्नसंदोह · पार्श्वनाथचरित · न्यायकुमुदचन्द्र · प्रमेयकमलमार्तण्ड

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ५७ — मूल छायाचित्र

← सुभाषितरत्नसंदोह

पार्श्वनाथचरित →